नया हुक्मनामा

किसी का हुक्म है
सारी हवाएं हमेशा
चलने से पहले ये बतायें
कि उनकी सम्त क्या है
हवाओं को ये भी बताना होगा
चलेंगी तो क्या रफ़्तार होगी
कि आंधी की इजाजत अब नहीं है
हमारी रेत की ये फसीलें
कागज़ के हमारे ये महल बन रहे हैं
हिफ़ाजत इनकी करना है जरूरी
आंधी से इनकी दुश्मनी है पुरानी
ये सभी जानते हैं
किसी का हुक्म है
दरिया की लहरें
ये सरकशी कम कर लें
अपनी हद में ठहरें
उभरना फ़िर बिखरना
बिखर कर फ़िर उभरना
गलत है उनका ये हंगामा करना
ये है सिर्फ़ वहशत की सलागत
ये है सिर्फ़ बगावत की अलामत
बगावत तो नहीं बर्दाशत होगी
ये वहशत तो नहीं बर्दाशत होगी
अगर लहरों को है दरिया में रहना
तो उनको होगा चुपचाप बहना
किसी का हुक्म है
कि इस गुलस्तां में बस
इक रंग के ही फूल होंगे
कुछ अफ़सर होंगे जो ये तय करेंगे
गुलस्तां किस तरह बनना है कल का
यकीनन फूल होंगे इक रंग के
पर ये रंग होगा, कितना गहरा कितना हल्का
ये अफ़सर तय करेंगे
किसी को ये कोई कैसे बताये
गुलिस्तां में फूल कहीं भी
इक रंगी नहीं होते
कभी हो ही नहीं सकते
क्यूंकि इक रंग में
कई रंग रहते हैं
जिन्होंने बाग इकरंगी
बनाने चाहे थे
उनको ज़रा देखो
इक रंग में सौ रंग
ज़ाहिर हो गये हैं तो
वो कितने परेशां हैं
कितने तंग रहते हैं
किसी को कैसे कोई बताये
हवाएं और लहरें कब किसी का हुक्म सुनती हैं
हवाएं, हाकिमों की मुट्ठियों में
हथकड़ियों में कैदखानों में
नहीं रुकतीं
ये लहरें रोकी जाती हैं
तो दरिया कितना भी हो पुरसुकुन
बेताब होता है

– जावेद अख्तर

यह सप्ताह / निंदा या प्रशंसा मात्र तरंगे ही तो हैं....

कोलंबा कालीधर

जब निंदा की ध्वनि तरंगें हमारे कानो को स्पर्श करती हैं तो अपने पुराने संस्कारो से प्रभावित हुई संज्ञा उनका अधोमूल्यन करती है और इन शब्दों को बुरा मान लेने के कारण शरीर में अप्रिय, दुखद संवेदना उत्पन्न होती है।

उसी के परिणाम स्वरुप अज्ञान अवस्था में हमारे मानस का एक हिस्सा दुर्मन हो उठता है और द्वेष, क्रोध, कोप की प्रतिक्रिया करने लगता है।

हमारे प्रशंसा की तरंगें हमारे कानो को स्पर्श करती हैं तो यह संज्ञा उनका ऊर्ध्वमूल्यन करती है, और उन शब्दों को अच्छा मान लेने से शरीर में प्रिय-सुखद संवेदना का संचार होता है।

उसी के परिणाम स्वरुप हमारे मानस का एक हिस्सा प्रफुल्लित हो उठता है और राग, लोभ, आसक्ति की प्रतिक्रिया करने लगता है।

प्रतिक्रिया चाहे राग की हो या द्वेष की, मानस अपनी समता खो बैठता है और विकार पर विकार जगते ही जाते हैं।

निंदा या प्रशंसा सुनकर यदि हम राग या द्वेष जगाते हैं तो हम औरों की हानि करें या न करें, अपनी हानि तो अवश्य करते हैं। अत: इससे बचें और जीवन पथ पर प्रगतिशील बने रहें और अपना मंगल साधते रहें।

ओ सांता / मधुलिका

अपने झोले में मत लाना
सिर्फ टैडी बियर या चॉकलेट्स
उससे ज्यादा जरूरी है
भात...
देखो तुमने आने में देर कर दी
भात खोजने चले गए कुछ
और कुछ साँस लेने भर की
ऑक्सीजन लेने
माँ की गोद छोड़कर
रास्ता भटक गए
अब वे शायद ही लौटें
अब आ ही गए हो
तो झोले में लाना
गर्म स्वेटर,रजाई और लिहाफ़
कुछ रोटियाँ थोड़ा भात
थोड़ी पेंसिलें,कागज़ और रंग.
एक डस्टर भी लाना
धरती पर जो तमाम लाइनें खींच
दी हैं किसी ने
उनको बिगाड़ जाना.

श्राद्ध के संबंध में ऋषि जाबालि

राजीव रंजन चतुर्वेदी

अष्टकापितृदेवत्यमित्ययं प्रसृतो जनः।
अन्नस्योपद्रवं पश्य मृतो हि किमशिष्यति ।।14।।

अष्टकादि श्राद्ध पितर-देवों के प्रति समर्पित हैं यह धारणा व्यक्ति के मन में व्याप्त रहती है, इस विचार के साथ कि यहां समर्पित भोग उन्हें उस लोक में मिलेंगे । यह तो सरासर अन्न की बरबादी है । भला देखो यहां दिया गया किसी का अन्नादि उनको कैसे मिल सकता है ?

वे आगे तर्क देते हैं -

यदि भुक्तमिहान्येन देहमन्यस्य गच्छति।
दद्यात् प्रवसतां श्राद्धं तत्पथ्यमशनं भवेत् ।।15।।

वास्तव में यदि यहां भक्षित अन्न अन्यत्र किसी दूसरे के देह को मिल सकता तो अवश्य ही परदेस में प्रवास में गये व्यक्ति की वहां भोजन की व्यवस्था आसान हो जाती ङ्क यहां उसका श्राद्ध कर दो और वहां उसकी भूख शांत हो जाये !

(वाल्मीकि - रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 108)

जीसस ने बचपन से बहुत आकर्षित किया

चरवाहे के घर पैदा हुआ
भेड़ें चराता रहा एक निर्दोष जीवन जिया
महिला को सजा देने के लिए पत्थर मारने वाली भीड़ से कहा पहला पत्थर वो मारे जिसने पाप ना किया हो
कितने साहस की बात!
जीसस का जन्म का धर्म यहूदी था
तब तक कहा जाता था कि दांत के बदले दांत और आँख के बदले आँख ही धर्म है
जीसस ने पहली बार कहा कि नहीं यह धर्म नहीं है
बल्कि धर्म यह है कि कोई तुम्हारे एक गाल पर चांटा मारे तो तुम दूसरा गाल भी आगे कर दो
कोई तुमसे कमीज़ मांगे तो तुम उसे अपना कोट भी दे दो
जीसस ने मन्दिर के बाहर बैठ कर सूद पर क़र्ज़ देने वाले साहूकारों को कोड़े मार कर भगाया
वह गरीब की तरह पैदा हुआ गरीब की तरह जिया
उसे भला होने के लिए सज़ा दी गई
जीसस को दो चोरों के साथ अपना सलीब खुद अपने कन्धों पर ढोने के लिए मजबूर किया गया
काँटों की टहनी उसके सर के चारों तरफ पहना दी गई
अंत में जीसस को लकड़ी के सलीब पर कीलों से ठोक दिया गया
वह गरीब की तरह पैदा हुआ
गरीब की तरह जिया
गरीबों के लिए जिया
और गरीब की तरह मारा गया
जीसस मुझे एक धार्मिक नेता नहीं हमें अपना साथी लगता है।
कामरेड जीसस को लाल सलाम!

- हिमांशु कुमार

परहित ही सर्वोत्तम सुख

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

हम सभी अपने जीवन में सुखी रहना चाहते हैं इसलिए हम अपने बच्चों को भी ऐसी शिक्षा देते हैं ताकि वे बड़े होकर अधिक से अधिक धन एवं सम्मान अर्जित कर सकें। हम सुख प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। सुखी रहने के भी चार स्तर हैं :- पहला स्तर है शारीरिक रूप से। हम सभी चा हते हैं कि हम स्वस्थ रहकर हर सुख का भोग कर सकें। अर्थात हमें किसी प्रकार की कोई व्याधि न हो, हम चुस्त-दुरूस्त रह कर अधिक से अधिक धन प्राप्त करें और संसार के सभी सुखों का भोग कर सकें। सुख का दूसरा स्तर है मन और बुद्धि। हमारा मन शुद्ध हो और शान्त हो। शान्त मन और शुद्ध बुद्धि ही हमें जीवन में सुख के मार्ग का बोध कराते हैं।

तीसरा स्तर है भावनात्मक। हम प्रत्येक कार्य मन की भावनाओं के आधार पर करें, हृदय से प्यार करें, किसी को कष्ट न पहुचाएँ, हिंसा न अपनाएँ, मिल-जुल कर रहें, दयालु बने, क्षमा याचना के भाव हों और चौथा स्तर है आध्यात्मिक स्तर अर्थात हम ब्रह्मान्ड का ध्यान रखें, हम सोचें कि प्रकृति ही हमारा घर है, हमें उससे प्रेम हो, हम प्रकृति को किसी प्रकार का कष्ट न दें। हमारे मन में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना हो। यह सब बातें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हम अपने सुख के लिए सोचते हैं, लेकिन इसमें परोपकार या किसी के हित की भावना नहीं आती है वास्तविक सुख तब प्राप्त होता है जब हम दूसरों के हित के विषय में सोचते हैं अर्थात सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु:खभाग्भवेत्॥

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव ने जगत हित के लिए सागर मंथन से निकले विष को अपने कंठ में धारण किया और महादेव कहलाए। आज के परिदृश्य में इस प्रकार की बातें केवल ग्रंथों तक ही सीमित रह गई हैं। हम अपने बच्चों को समझाएँ कि 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई' अर्थात परहित से बढ़ कर दूसरा सुख नहीं होता है जितना अधिक हम परोपकार करेंगे उतना ही हमें सुख प्राप्त होगा।

FASHION.IN

Available all types of
ladies cotton kurties, Fancy Kurties,
Jegin, legin, Fancy Top,
T-Shirts, Trousers and imported
material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY
TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।
Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR
DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH
CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490